Q भीड़ व्यवहार के सिद्धांत (Theories of Crowd behaviour)

Ans भीड़ व्यवहार के सम्बन्ध में पहला प्रश्न जो हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होता है, वह यह कि वही व्यक्ति जो कुछ कार्यों को आम स्थिति में करते हुए हिचकता है या उन कार्यों को करने में अपने आप को असमर्थ पाता है वही व्यक्ति भीड़ में शामिल होकर उन कार्यों को कैसे करने लगता है? जो व्यक्ति अपने सामान्य जीवन में विवेक से कार्य करता है, वही व्यक्ति भीड़ में विवेकहीन कैसे हो जाता है? इस प्रश्न का समाधान प्रस्तुत करने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने सिद्धान्तानुसार भीड़ व्यवहार का विश्लेषण किया है-

1. समूह का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के समर्थक दुर्खीम, एस्पिनास, ली बॉन तथा मैकडूगल हैं। इन लोगों ने भीड़ व्यवहार की व्याख्या समूह-मन के आधार पर की है। इन लोगों के अनुसार मनुष्य के मन के दो रूप होते हैं- (i) व्यक्तिगत मन तथा (ii) समूह मन। जब व्यक्ति किसी कारणवश समूह के रूप में एकत्रित होता है तो एक दूसरे के सम्पर्क में आता है और उनमें एकता उत्पन्न हो जाती है।

फलस्वरूप उसका व्यवहार व्यक्तिगत व्यवहार से भिन्न हो जाता है और उसका व्यवहार इसी सामूहिक मन द्वारा संचालित होता है।

2. दमित प्रेरणाओं का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त का प्रतिपादन फ्रायड ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार हमारी कुछ इच्छाएँ तो ऐसी हैं जिन्हें समाज स्वीकृति प्रदान करता है इसलिए उन्हें हम पूरी कर लेते हैं किन्तु कुछ इच्छाएँ ऐसी हैं जिन्हें पूरा करने की अनुमति समाज नहीं देता है। वास्तव में ऐसी इच्छाओं का दमन किया जाता है। लेकिन ये हमारे अचेतन मन या मानसिक में दबी रहती हैं। भीड़ व्यवहार के समय व्यक्ति को ऐसी अवसर मिल जाता है जिसमें वह अपनी दमित इच्छाओं को खुलकर पूर्ति करता है। क्योंकि उस समय उस पर समाज के नियम एवं नियंत्रण लागू नहीं होते हैं।

(3) सामाजिक दशा का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के अनुसार भीड़ एक सामाजिक संरचना होती है। इसलिए भीड़ व्यवहार की व्याख्या सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर ही की जानी चाहिए। जिस प्रकार की सामाजिक परिस्थितियाँ होती हैं, उसी के अनुसार भीड़ व्यवहार का रूप भी होता है।

आगबर्न एवं निमकाफ ने भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों को महत्व प्रदान करते हुए लिखा है कि भीड़ व्यवहार का विश्लेषण करते समय धर्म समूह एवं संस्कृति के महत्व पर विचार करना आवश्यक है। जहाँ नगरों के द्वैतीयक पर्यावरण में भीड़ व्यवहार अधिक देखने को मिलता है, वहीं ग्रामीण समुदाय में प्राथमिक सम्बन्धों के फलस्वरूप एवं जनसंख्या कम होने से भीड़ व्यवहार बहुत कम पाया जाता है।

(4) सामाजिक सुविधाकरण का सिद्धान्त

भीड़ व्यवहार का विश्लेषण के लिए आलपोर्ट ने सामाजिक सुविधाकरण या प्रोत्साहन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। आलपोर्ट के नाम पर ही इस सिद्धान्त को Thesis of Alport के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मापन उत्तेजना दो व्यक्तियों में समान क्रिया उत्पन्न करती है। एक व्यक्ति को देखकर दूसरा उत्तेजित व्यक्ति वैसी ही अनुक्रिया करने लगता है। जब व्यक्ति भीड़ का सदस्य होता है तो उन्हें भी इन प्रकार की सुविधा मिलने लगती है जिससे समान रूप से उत्तेजित व्यक्ति एकत्रित होकर समान व्यवहार करने लगते हैं।

भीड़ व्यवहार से सम्बन्धित उपरोक्त सिद्धान्तों का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि कोई भी सिद्धान्त अपने आप में भीड़ के लिये पूर्ण नहीं है।

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Fac
Dept of Sociology.
Date- 08/07/2021